सुनील जी जिन्होंने सार्थक विकास की राह दिखाई

भारत डोगरा

21 अप्रैल को दिल्ली में देश के जाने-माने विचारक, लेखक व आंदोलनकारी सुनील का 54 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। उनका निधन एक असहनीय क्षति है। कई स्तरों पर उनका योगदान बहुत अमूल्य था - आंदोलनकारी के रूप में, वैकल्पिक राजनीतिक दल के नेता के रूप में, संपादक व लेखक के रूप में। उन्होंने विकास की वैकल्पिक सोच को सदा महत्व दिया। मौजूदा विकास की तमाम कमियों व विसंगतियों की ओर उन्होंने ध्यान दिलाया व इसके विकल्पों के बारे में बहुत चिंतन-मनन किया, लेख लिखे व सबसे बड़ी बात तो यह है कि वास्तविक जीवन की पेचीदगियों व समस्याओं के बीच कई महत्वपूर्ण प्रयोग भी उन्होंने इस दिशा में किए।

सुनील जी के लेखन के साथ उनके द्वारा संपादित सामयिक वार्ता से भी यह स्पष्ट होता है कि वे विकल्पों की तलाश को कितना महत्व देते थे। इस विषय से जुड़े लेख प्रायः उनके द्वारा संपादित पत्रिकाओं में व उनकी पुस्तक-पुस्तिकाओं में पढ़ने को मिलते थे। विकल्पों सम्बंधी उनके सरोकारों का दायरा बहुत विस्तृत था। कभी वे कृषि सम्बंधी विषयों पर लिखते थे तो कभी उद्योगों पर, कभी यातायात पर तो कभी व्यापार पर।

कभी-कभी विकल्प के नाम पर अनुचित तकनीकों का प्रसार भी किया जाता है और ऐसी संभावनाओं के प्रति सुनील जी बहुत सजग रहते थे। जिस समय बीटी कॉटन का बहुत प्रसार-प्रचार हो रहा था, उन दिनों सुनील जी इसके वास्तविक असर की गहरी जांच-पड़ताल से जुड़ गए थे। उन्होंने इसकी गहरी जांच-पड़ताल कर मिथकों को तोड़ने का प्रयास किया। इन प्रयासों के चलते स्थानीय लोगों के सामने सही व संतुलित जानकारी आई और वे बीटी कॉटन के खतरों के प्रति सावधान हुए।

बहुत से विचारक हैं जो चाहे कितने भी अच्छे विचार समाज के सामने रखते हों, पर इन्हें व्यवहारिक तौर पर आज़माने की कठिनाइयों में वे नहीं उलझते हैं। पर सुनील जी ने जो विचार समाज के सामने रखे, उन विचारों को उन्होंने बेहद जटिल व पेचीदा समस्याओं के बीच व कई कठिनाइयों के बीच क्रियान्वित करने का प्रयास भी किया। इस प्रयास में उन्हें हिंसा सहनी पड़ी या जेल जाना पड़ा तो यह भी उन्होंने स्वीकार किया।

परिणामस्वरूप वे जो कहते थे उसके साथ मूल्यवान व्यवहारिक अनुभव व अपने कार्यक्षेत्र की वास्तविक स्थितियों से सीखे गहरे अनुभव भी जुड़े होते थे। यही वजह है कि उनके विकास सम्बंधी विचारों का, विशेषकर वैकल्पिक विकास सम्बंधी सोच का बहुत विशिष्ट महत्व है।

सुनील जी के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि जहां वे अपने क्षेत्र के ज़मीनी अनुभवों से सीखते थे वहीं वे विश्व स्तर की जानकारी भी विस्तार से प्राप्त करते थे।

इस तरह वे जो सोच सामने रखते थे उसमें स्थानीय अनुभवों व विश्व स्तर के अध्ययन का एक अच्छा मिलन होता था जो बहुमूल्य था। वे देश के उन गिने-चुने विचारकों में रहे हैं जो विकास के मौजूदा मॉडल की तर्कसंगत आलोचना विश्वसनीय ढंग से रख सके थे व इसके विकल्प भी अनेक स्तरों पर सुझाते रहे थे। अतः सार्थक विकास की राह तलाशने में सुनील जी के विचारों व अध्ययन से बहुत समय तक मूल्यवान मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

इसके साथ-साथ वैकल्पिक राजनीति के एक प्रतिभाशाली नेता, एक जुझारू व निडर आंदोलनकारी तथा अनेक रचनात्मक कार्यों से जुड़े समाज सेवक के रूप में भी सुनील जी सदा याद किए जाते रहेंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***